सत्यमेव जयते

खानदेशी भाशा प्रवेशिका
खानदेशी भाषा प्रवेशिका
KHANDESHI PRIMER

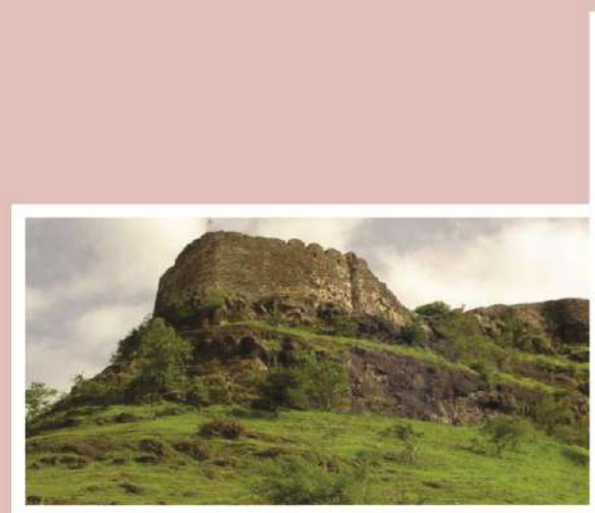

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

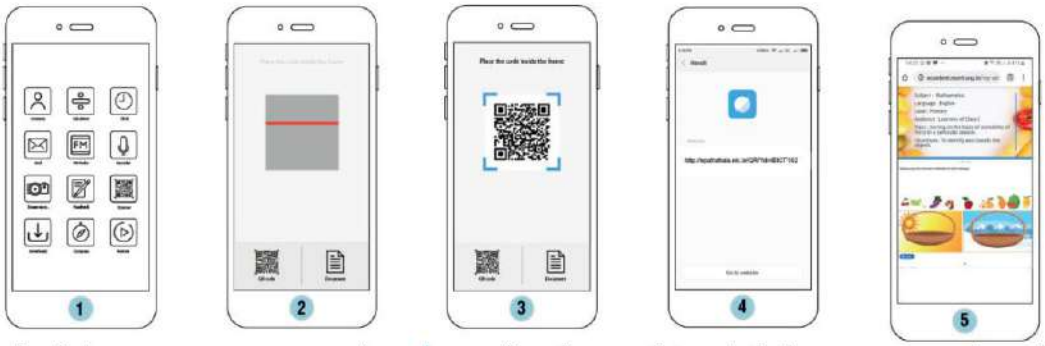

1	2	3	4	5
प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें	क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें	स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें	लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें	उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1	2	3	4	5	6
अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें	अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी	पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें	क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें	कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें	क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

खानदेशी भाशा प्रवेशिका

खानदेशी भाषा प्रवेशिका

KHANDESHI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

खानदेशी भाशा प्रवेशिका

खानदेशी भाषा प्रवेशिका

KHANDESHI PRIMER

A basal reader of Khandeshi alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Sujata Bhujang

ISBN: 978-81-19411-86-3

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj
Cover Photo: Pravin Mali

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार

Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है, जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

भारत हा युगानुयुगे बहुभाषिक देश राहिला आहे, ज्यात विविध प्रदेशात अनेक भाषा बोलल्या जातात. आपल्या शाब्दिक संग्रहामध्ये आपण अनेक भाषा वापरतो आणि त्यांचा आनंद घेतो हे देशाचे एक सामान्य वैशिष्ट्य आहे, जे आपल्याला एकत्र बांधते आणि आपल्याला एकजूट ठेवते. एन. ई. पी. 2020 भारताचे बहुभाषिक स्वरूप ही एक लक्षणीय संपत्ती आणि सामर्थ्य आहे ज्याचा देशाच्या सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक आणि शैक्षणिक विकासासाठी कार्यक्षमतेने वापर करणे आवश्यक आहे या कल्पनेचे सखोल उदाहरण देते. प्रत्येक स्तरावर शिक्षणात बहुभाषिकतेला प्रोत्साहन देण्याची शिफारस यात केली आहे जेणेकरून विद्यार्थ्यांना त्यांच्या भाषेत (भाषांमध्ये) शिक्षण घेण्याची संधी मिळेल. सर्व भारतीय भाषांमध्ये अध्यापन–शिक्षण साहित्य तयार केल्याने या बहुभाषिक संपत्तीला चालना मिळेल आणि 'विकसित भारत' च्या दृष्टीकोनात अधिक चांगले योगदान मिळू शकेल. एन. ई. पी. 2020 च्या अनुषंगाने प्रारंभिक दर्जाचे प्राइमर्स विकसित करण्यासाठी भारतातील प्रत्येक प्रदेशातील अद्वितीय भाषिक आणि सांस्कृतिक वैशिष्ट्यांना संबोधित करणारा सर्वसमावेशक आणि सर्वसमावेशक दृष्टीकोन

आवश्यक आहे. या प्राइमर्सचे उद्दीष्ट वाचन आणि लिखाणात भाषा प्रवीणता प्रदान करणे आणि सुरुवातीच्या इयत्तेच्या विद्यार्थ्यांमध्ये सर्जनशीलता आणि गंभीर विचारांना चालना देणे हे आहे. ते वर्णमाला अक्षरे ओळखणे, समजून घेणे आणि स्पष्ट करणे शिकण्यासाठी एक गुरुकिल्ली म्हणून काम करतील. प्राइमर्स मुलांना या अक्षरांच्या एक किंवा अधिक संचाचा अर्थ त्यांच्या संयोगाने देखील परिचित करतात, उदाहरणार्थ शब्दाच्या सुरुवातीच्या, मध्यवर्ती आणि अंतिम स्थानांवरील अक्षरे, मुलांशी प्राथमिक आवृत्ती परिचित करते आणि शेवटी, अध्यायांमध्ये सादर केलेली अक्षरे लिहिण्याच्या सरावासाठी ते एक उदाहरण प्रदान करते. बडबड गीते आणि गाणी मुलांना त्यांच्या भाषेचा विकास, संज्ञानात्मक कौशल्ये आणि स्मरणशक्ती सुधारण्यास मदत करतील.

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Khandeshi Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinator

Sujata Raosaheb Bhujang, Lecturer in Marathi, Western Regional Language Centre, CIIL, Pune, Maharashtra.

Resource Persons

Jayshri Sadashiv Bharambe, Research Scholar, Department of Linguistics, Deccan College Post-Graduate & Research Institute, Yerwada, Pune.
Ramesh Virabhan Dhangar, Assistant Teacher, Jawahar High School & Jr. College, Girad, Taluka Bhadgaon, Jalgaon.
Pravin Shantaram Mali, Assistant Teacher, Zilla Parishad Primary School, Ajantisim, Taluka Chopda, Jalgaon.
Rupali Ramchandra Mali, Assistant Teacher, R.Z.Primary School, Kude, Block-Alibag, Raigad.

Marathi Reviewer

Bhageshree K. Khandale, Junior Resource Person, Linguistic Data Consortium for Indian Languages, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, RP (Teaching) in Bodo, NERLC, Guwahati, CIIL
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

भाषा प्रवेशिका पुस्तक कसे शिकवावे ?

राष्ट्रीय नवीन शैक्षणिक धोरण २०२० आणि राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडा २०२२ अंतर्गत, तीन ते आठ वर्षे वयोगटातील मुलांना त्यांच्या मातृभाषा, घरात बोलली जाणारी भाषा, स्थानिक भाषा आणि प्रादेशिक भाषेत शिक्षण देण्याची व्यवस्था करण्यात आली आहे. भारतातील आदिवासीबहुल भागातील मुलांना वर्गशिक्षण पद्धती समजू शकत नाही. याचा परिणाम शाळेच्या शिक्षण व्यवस्थेवर होतो. म्हणूनच केंद्र सरकारने बालवाडीतील ३ ते ५ वयोगटातील मुलांना आणि इयत्ता १ ली आणि २ री च्या मुलांना प्राथमिक स्तरावर मूलभूत साक्षरता देण्याची व्यवस्था केली आहे. यामध्ये स्थानिक लोकगीते आणि कथांच्या माध्यमातून मुलांची मौखिक भाषा विकसित करण्यावर भर देण्यात आला आहे. पुस्तकातील कथा, चित्रे, संवाद यातून हे काम केले जात आहे. यासोबतच मुलांचा ध्वनी परिचय, वर्णमाला परिचय, वाचन आणि लेखन सरावासाठी भाषा शिकवणाऱ्या पुस्तकाचाही वापर केला जात आहे.

मुलांना त्यांच्या मातृभाषेतून बालवाडी स्तरापासून ते इयत्ता तिसरीपर्यंत शिकवल्यास त्यांच्या बौद्धिक विकासासोबत सर्जनशीलता आणि कल्पनाशक्तीच्या विकासात मदत होऊ शकते. महाराष्ट्र राज्यात मुलांना वर्गात मराठी भाषेत नीट वाचता आणि लिहिता येत नाही, कारण मुलांना शाळेत मूलभूत साक्षरता येत नाही. मुलांना त्यांच्या मातृभाषेत वाचायला आणि लिहायला शिकण्याबरोबरच मराठीमध्ये हळूहळू वाचायला आणि लिहायला कसे शिकता येईल याची एक अर्थपूर्ण पद्धत राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडा २०२२ मध्ये तपशीलवार लिहिली आहे. मुले आधी लिहायला आणि वाचायला शिकतात. त्यामुळे मराठी भाषेतील वर्णमाला पुस्तकात मुलांच्या मातृभाषेतील सर्व ध्वनी, अक्षरे व प्रमाणांना शालेय मराठी भाषेला स्थान देण्यात आले आहे. मुलांची संस्कृती आणि वातावरणातून शब्द गोळा करून पुस्तकात स्थान दिले आहे.

बहुभाषिक शिक्षणाचे मूळ उद्दिष्ट हे आहे की मुलांच्या मातृभाषेतून राज्यभाषेत वाचन आणि लेखन सुरू करणे. वाचन आणि लेखनाची कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी हे पुस्तक महाराष्ट्र राज्यातून खानदेशी आणि मराठी भाषेत सादर करण्यात आले आहे. मूलभूत साक्षरतेच्या चार प्रमुख पायऱ्या आहेत.

पहिल्या टप्प्यात मुलांचा बौद्धिक विकास कथा, कविता आणि चित्रांच्या माध्यमातून केला जातो. त्यानंतर भाषा शिकण्यासाठी, मुलांना वस्तूंबरोबरच शब्दांची ओळख करून दिली जाते आणि शब्दांमध्ये मांडलेली अक्षरे ओळखली जाते. या क्रमाने मुले वेगवेगळ्या अक्षरांना ओळखायला शिकतात. अश्याप्रकारे, मुले ध्वनी आणि अक्षरांमधील संबंध समजतात.

भाषा शिक्षण प्रवेशिका कसं वाचावं याचे मूलभूत मुद्दे खाली लिहिले आहेत.

ध्वनीची ओळख : चित्र पाहून मुले त्या वस्तूचे नाव सांगतील. शिक्षक विचारतील, चित्राचे नाव कोणत्या आवाजाने सुरू होते? उदाहरणार्थ, 'अऊत' हे चित्र पाहिल्यानंतर मुले ओळखतील की ते 'अ' ध्वनीने सुरू होते.

वर्णमालेची ओळख : शिक्षक प्रथम मुलांना 'अ' हे अक्षर कसे दिसते हे सांगतील. दिलेल्या काही शब्दांमधून 'अ' अक्षर ओळखण्यास सांगितले जाईल. मुलं तीन-चार शब्दांमधून 'अ' अक्षराचा आवाज उच्चारतील आणि 'अ' अक्षर लिहिण्याचा सराव करतील.

वाचन: मुले चित्रे पाहतील आणि त्यांच्या भाषेत शब्द बोलतील. मुलं त्या शब्दाच्या डावीकडून उजवीकडे बोट हलवून 'अऊत' वाचतील. अश्याच प्रकारचे अन्य शब्द वाचून मुले 'अ' अक्षर ओळखतील आणि त्याचा उच्चार करतील. शिक्षक मुलांना सांगतील की शब्दाच्या सुरुवातीला, मध्यभागी आणि शेवटी 'अ' कुठे आहे.

फळ्यावर 'अ' वाचताना शिक्षक 'अऊत' या शब्दासोबत इतर तीन–चार शब्दही लिहितील. एक–एक करून मुलांबरोबर चर्चा करतील. शब्द वाचण्यासाठी आणि अक्षरे ओळखण्यासाठी हे सर्व शब्द मुलांच्या विश्वातून घेतलेले आहेत. पुस्तकातील चित्रे पाहून मुलं हे शब्द ओळखतील आणि सहजतेने बोलू शकतील. हे वाचून मुलांना छान वाटेल. शिक्षक एक शब्द लिहितील आणि मुलांना त्यातील प्रत्येक अक्षर स्वतंत्रपणे वाचण्यास सांगतील. त्यानंतर अक्षरे जोडून शब्द वाचण्यास सांगितले जाईल. मुले अक्षरे, शब्द आणि ध्वनी देखील ओळखू शकतील. जेव्हा एखादा मुलगा एखादा शब्द वाचेल तेव्हा इतर मुले त्याच्यासोबत सामील होतील आणि शब्द पुन्हा उच्चारतील. याला 'सामूहिक वाचन' म्हणतात.

लेखन: शिक्षक प्रथम मुलांना 'अऊत' शब्दाचा 'अ' लिहायला शिकवतील. डावीकडून उजवीकडे लिहिण्यासाठी पेन कसा वापरायचा हे शिक्षक दाखवतील. याला 'सहाय्यक लेखन' म्हणतात. त्यानंतर पुस्तकात दिलेल्या रिकाम्या जागेतील इतर अक्षरे पाहून मुलं स्वतः 'अ' लिहतील. मुलांचे वाचन आणि लेखन करताना शिक्षक यामध्ये मदत करतील.

मुलांच्या मौखिक भाषेच्या विकासासाठी प्रत्येक अक्षर परिचयानंतर दोन–तीन वाक्यांची छोटी गाणी दिली आहेत. शिक्षक गाऊन आणि वाचून मुलांशी चर्चा करतील. शाळेच्या वाचनालयात उपलब्ध असलेल्या बालकथांचे पुस्तक वाचल्यानंतर त्या कथेवर मुलांसोबत चर्चा करता येईल. आपण इयत्ता पहिली आणि दुसरीच्या मुलांना त्यांच्या मातृभाषेतून कथा आणि गाणी सांगू शकतो. पुस्तकात दिलेले शब्द हे साक्षरतेचे उदाहरण आहेत. मुलांना शेकडो शब्द माहित असतात. त्यामुळे एक अक्षरी शब्द विचारल्यास ते अनेक शब्द ऐकवू शकतात. (उदाहरणार्थ, जसे शिक्षक मुलांना विचारतील की – 'अ' ने सुरू होणारे काही शब्द सांगा.)

मुलांच्या सोयीसाठी, खानदेशी भाषेत उपलब्ध वर्णमालेतील गाणी/शब्द/अक्षरे प्रथम देण्यात आली आहेत. हा धडा शिकताना मुलांना त्यांच्या मातृभाषेतून मराठी ध्वनी आणि लिपी शिकता येईल. खानदेशी भाषेत सर्व अक्षरे नसतात. म्हणूनच नंतर उर्वरीत वर्णमाला मराठी भाषेमधून देण्यात आलेली आहेत. मातृभाषेतील उपलब्ध अक्षरे आणि मातृभाषेत नसलेली मराठी अक्षरे एकत्र करून एक संपूर्ण खानदेशी भाषा शिक्षणाचे प्रवेशिका सादर केले आहे. राज्यातील शाळांमध्ये वितरित करण्यात आलेली 'शिक्षक सहाय्यक पुस्तिका' वाचून तुम्ही मूलभूत साक्षरतेबद्दल अधिक जाणून घेऊ शकता.

खाली दिलेल्या रेषा बघा आणि गिरवा.

उभी रेषा :

आडवी रेषा :

तिरपी रेषा १ :

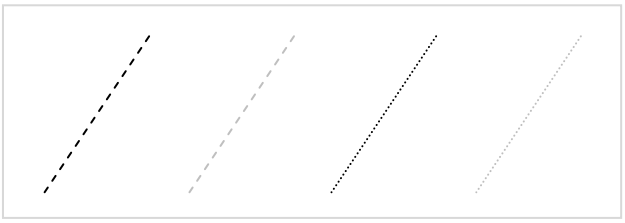

तिरपी रेषा २ :

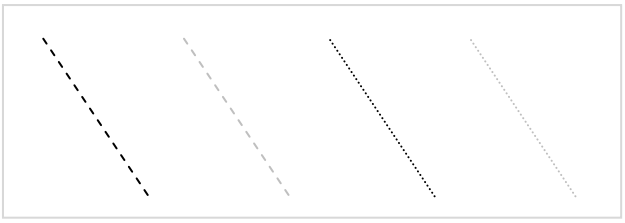

अर्ध गोल १ :

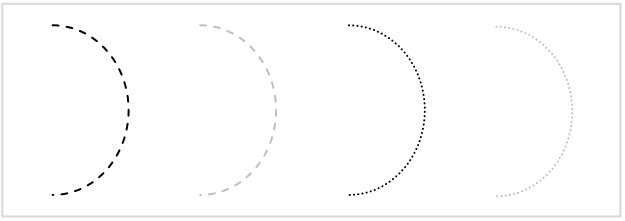

अर्ध गोल २ :

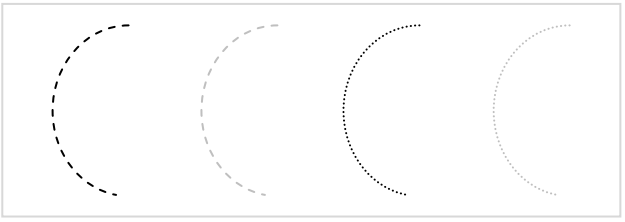

सूचना – येथे शिक्षक मुलांना सुचना करतील की पेन/पेन्सील कशी पकडायची आणि दिलेल्या रेषा गिरवायला सांगतील.

खानदेशी वर्णमाला

स्वर						
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए
ॲ	ऐ	ओ	औ	अं		

व्यजंन				
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह			

अ

अऊत

नांगर

अ पशीन अऊत फाटा,
धरती मायले लागे काटा

अदरक	आले	अई	अळी	अननस	अननस

अ अ अ

आ

आकटी

शेकोटी

आ पशीन आकटी चेटाडा,
आऽ ऽ आऽ ऽ आंग शेकाडा

१ २ ३ ४ ५
६ ७ ८ ९ १०

१ १

आकपेटी	आगपेटी	आकडे	अंक	आकरा	अकरा

आ आ आ

इ

इज

वीज

इ पशीन इज चमके आभायमा,
धडधड करस छातीमा

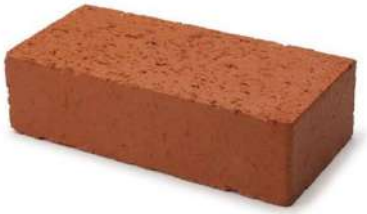

इट	वीट	कइ	कळी	इहिर	विहिर

इ इ इ

ई

ईस्तो

विस्तव

ई पशीन ईस्तो

थंडीमा ऊब देई

ईया	विळा	ईवान	विमान	सनई	शहनाई

ई ई ई

उ

उसी

उशी

उ पशीन नरम उशी
डोकाले आधार देशी

उदबत्ती	अगरबत्ती
कउल	कौल
उट	उंट

उ उ उ

ऊ

ऊस

ऊस

ऊ पशीन गोड गोड ऊस
गोडाई दनोरी सोनानी मुस

ऊरूस	यात्रा	ऊयद	ऊडीद	ऊखय	ऊखळ

ऊ ऊ ऊ

ए

एकलाई

ऐरण

ए पशीन एकलाई घन बसनात चांबडाले

धन भेटस चांभाराले

१

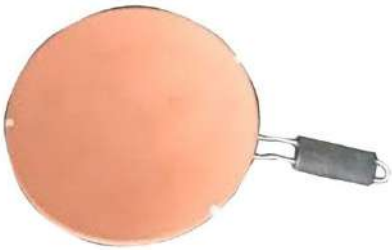

एक	एक	एकुई	मातीचा तवा	एलदोडा	वेलदोडा

ए ए ए

अॅ

कॅक्टर

ट्रॅक्टर

कॅक्टर उना खेतमा
जोर उना कामेस्ले
वजन वाढा बयीराजाना पाकिटमा

अॅ	अॅ	अॅ	
अॅ	अॅ	अॅ	

ऐ

ऐना

आरसा

ऐ पशीन ऐना सजाडा

जसा तसा दिखाडा

ऐकतारी | एकतारा

ऐ

ऐ

ऐ

ऐ

ऐ

ओ

ओमनी

ओमनी गाडी

ओ पशीन ओमनी आपले कामनी
फिरायी बसीसन चारधामन

ओय	ओळ	ओस	दव	ओवायनी	ओवाळणी

ओ ओ ओ

औ

औसद

औषध

औ पशीन औत

औत चालं वावरमां बयी राजानी पावरमा

औतबारदान	अवजार

औ औ

औ औ औ

अं

अंडा

अंडी

अं पशीन अंडा,
दुद अंडा खायजो
धरनपनले वायजो

अं

अंजन	बाम	अंजीर	अंजीर

अं

अं

अं

क

कयची

कात्री

क पशीन कयची तुकडा

कापे कचाकच तुकडा

पाडस पटापट

कढाय	कढई	बकरी	बकरी	कमय	कमळ

क क क

ख

खाट

पलंग

ख पशीन खाट

खाट टाकी धाबावर

साटा लाव चढ वर

खडा	दगड	पाखरू	फुलपाखरू	राख	राख

ख ख ख

ग

गवत

गवत

ग पशीन हिरव गवत

गाय–गो–हा मजानी चरस

गजरा	गजरा	आगीनगाडी	आगगाडी	जग	जग

ग ग ग

घ

घर

घर

घ पशीन घर

गाव तठे घर

घर तठे आंगन

घड्याय	घड्याळ	घागर	घागर	वाघ	वाघ

घ घ घ

ङ

रंग

रंग

रंग टाका कुंडामा
होई ख्या आंगनमा

पतंग	पतंग	शंख	शंख	कंगवा	कंगवा

ङ ङ ङ

च

चना

हरबरा

च पशीन चना
माले बी द्याना
ताकद भेटी तुमले
खावाले नई मना

चान	चंद्र	टाचन पिन	टाचणी	चमचा	चमचा

च च च

छ

छतरी

छत्री

छ पशीन छतरी

छतरी धरी डोकावर

पानी उना मोक्यावर

छनछन	पैंजण	छापा	ठसा	छडी	छडी

छ छ छ

ज

जाम

पेरू

ज पशीन हिरवा पिवया जाम
मनभरी खास नी पटीजास काम

जाज	जहाज	वजन काटा	वजनकाटा	जपमाय	जपमाळ

ज ज ज

झ

झबल

झबले

झ पशीन झबल

झबल घालात पोरले

पंख फुटनात मोरले

झारा	झारा	झाड	झाड	मेझर	टाकी

झ झ झ

ञ

पंजा

पंजा

ञ पशीन पंजा

मुट पक्की बांधजा

तांदुय	तांदुळ	गंजा	टकला	कांदा	कांदा

ञ ञ ञ

ट

टमाटा

टमाटे

ट पशीन टमाटा लाल लाल
रोज खावा फुगाडा गाल

टरबूज	टरबूज	पाटल	पाट	घरोट	जात

ट ट ट

ठ

ठसा

साचा

ठ पशीन ठसा चकलीना

कुरकुरीत तईसन वाढा ताटलीमा

ठठरा	मेंढीचा गोठा	ठेसन	स्टेशन	गाठ	गाठ

ठ ठ ठ

ड

डफड

डफ

ड पशीन डफड डमडम वाजे
नाचा लगिन मा लोक लाजे

डबा	डबा	डुल	कानातले	डायीम	डाळिंब

ड ड ड

ढ

ढग

ढग

ढ पशीन ढग दाटे
हवा फिरनी पानी आटे

ढापन	चष्मा	ढबी मिरची	शिमला मिरची	ढेमस	गोलभेंडी

ढ ढ ढ

त

तय

सरोवर

त पशीन तय

तयमाथीन पानी

सांगा कोन आनी ?

७

तलवार	तलवार	पातय	साडी	सात	सात

त त त

द

दरजा

दरवाजा

द पशीन दरजा
दरजाले बांधा तोरन
घरमा ठेवा एक धोरन

दाय	डाळ	चादर	चादर	दस्ती	रुमाल

द द द

ध

धरन

धरण

ध पशीन धरन

धरनमा पानी अडावस

बठासनी तीस भागाडस

धनगर	मेंढपाळ	गधड	गाढव	धागा	दोरा

ध ध ध

न

नदी

नदी

नदीमाय नजीकनी
पानी साठे थबकनी

नाक	नाक	पनती	पणती	पान	पान

न न न

प

पईप

पाईप

प पशीन पईप पानीमा
नदीना पानी पाजस घरमा

पावशी	विळी	कपडा	कपडा	सर्प	साप

प प प

ब

बघया

बगळा

ब पशीन बघया

धव्या बरफ देही ल्या

बईल	बैल	घुबय	घुबड	बलप	बल्ब

ब ब ब

भ

भवरा

भोवरा

भ पशीन भवरा

भवरा फिरना गरगर

खोल धसना जमिनमा

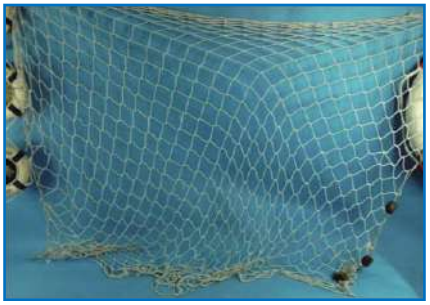

भुईमुग	शेंगदाणे	उभया	जाळ	भिंगोटा	भुंगा

भ भ भ

म

मगर

मगर

म पशीन मगर

अपनी मरजीना मालिक

कवा रास नदीना पानीमा कवा रास

जमिनवर

माखी	माशी	माथनी	माठ	मासोई	मासा

म म म

य

यल

वेल

य पशीन यल,
आधार लेस झाडना
वाढस झाडना तालवर

पाय	पाय	टाय	टाळ	नारय	नारळ

य य य

व

वजन

वजन

व पशीन वजन

धान मोजे मना आज

ववा	ओवा	वायर	वायर	वानर	माकड

व व व

श

शयर

शहर

श पशीन शयर झगमग
सदा मानूसनी जगानी तगमग

शिप	शिंपले	शेला	शाल	शिशी	बाटली

श श श

स

ससा

ससा

स पशीन सस पोटमा

धरीन सुटस कस

साकर	साखर	सहद	मध	सडक	डांबरीरस्ता

स स स

ह

हरिन

हरिण

ह पशीन हरिन,
हरिन पये पयत पयत
कस्तुरी गये

हाडूक	हाड	हात	हात	हाड्या	कावळा

ह ह ह

	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अ		कप	रबड
आ	ा	दाना	हार
इ	ि	खिरा	झिब
		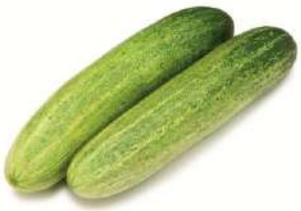	
ई	ी	गायनी	गावडी
उ	ु	खुडची	झुमका

स्वरस्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
उ	ु	मिठू	रेवू
ए	े	केय	रेडू
ऐ	ै	पैसा	
ओ	ो	गोया	खोबर
औ	ौ	औसद	औतबारदान

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अं	◌ं	पंखा	घंटी

१	यक	
२	दोन	
३	तीन	
४	चार	
५	पाच	
६	सऊ	
७	सात	
८	आठ	
९	नऊ	
१०	दा	

११	आकरा	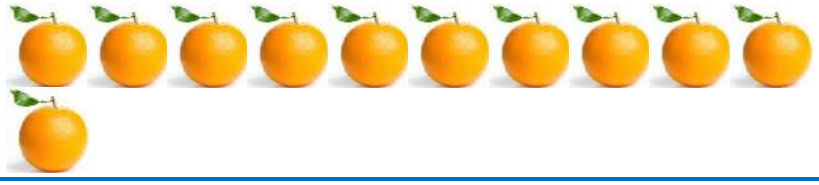
१२	बारा	
१३	तेरा	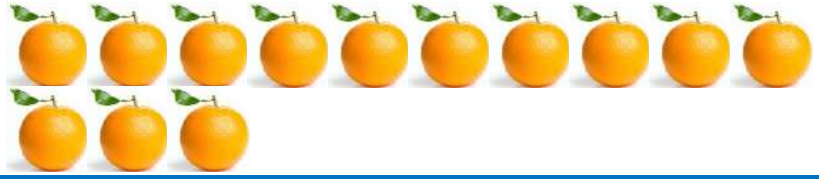
१४	चौदा	
१५	पंधरा	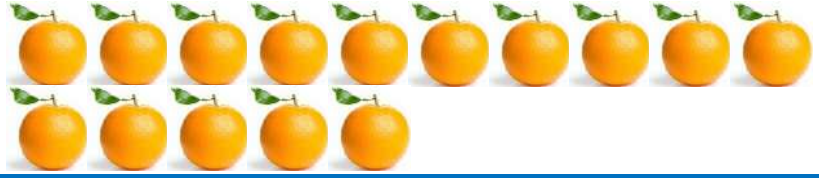
१६	सोया	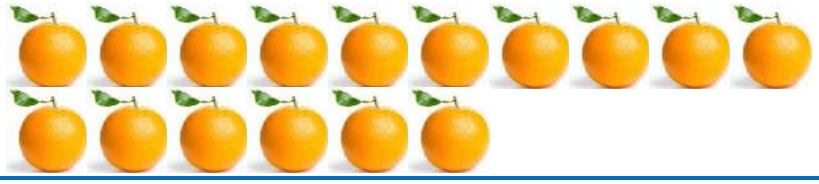
१७	सतरा	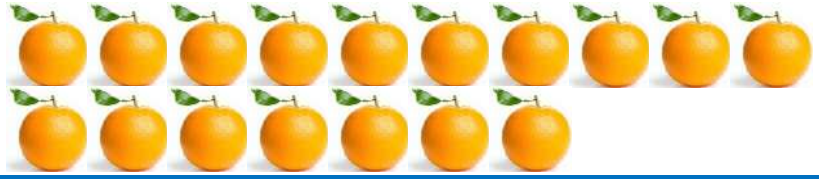
१८	आठरा	
१९	एकोनवीस	
२०	ईस	

मराठी वर्णमाला

स्वर						
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ऌ	ए	ॲ	ऐ	ओ	ऑ	औ
अं	अः					

व्यजंन				
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	ळ	क्ष
ज्ञ				

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

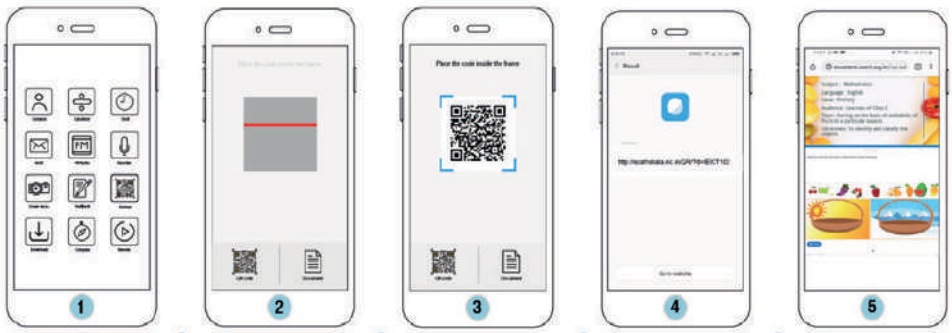

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE
2	BENGALI
3	BODO
4	DOGRI
5	GUJARATI
6	HINDI
7	KANNADA
8	KASHMIRI

Sl. No.	Languages
9	KONKANI
10	MAITHILI
11	MALAYALAM
12	MANIPURI
13	MARATHI
14	NEPALI
15	ODIA
16	PUNJABI

Sl. No.	Languages
17	SANSKRIT
18	SANTALI
19	SINDHI
20	TAMIL
21	TELUGU
22	URDU

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages
1	ADI
2	ANAL
3	ANGAMI
4	AO
5	BHILI (VASAVA)
6	BHUTIA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI
8	DEORI
9	DIMASA
10	GADABA (GUTOB)
11	GARO
12	HALBI
13	HMAR
14	JATAPU (KUVI)
15	JUANG
16	KABUI
17	KARBI
18	KHANDESHI
19	KHARIA

Sl. No.	Languages
20	KINNAURI
21	KISAN (KUNHU)
22	KODAVA
23	KOKBOROK
24	KOLAMI
25	KONDA
26	KORKU
27	KORWA
28	KOYA
29	KUI
30	KUKI
31	KURUKH
32	KUZHALE (KHEZHA)
33	LEPCHA
34	LIANGMAI
35	LIMBU
36	LOTHA
37	MAO
38	MISHMI (IDU)

Sl. No.	Languages
39	MISING
40	MIZO
41	MOGH
42	MUNDARI
43	NYISHI (NISSI)
44	RABHA
45	RAI
46	SHERPA
47	SAVARA (SORA)
48	SÜMI (SEMA)
49	TAMANG
50	TANGKHUL
51	TANGSA
52	TIWA (LALUNG)
53	TULU
54	WANCHO

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in